Dr. Vandana Suman
Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara

M. A II Sem.
CC-07 : Gandhian Philosophy

" Non–Violence" (अहिंसा)

OCTOBER 11
2013
Week 41
Day (284 081)
FRIDAY

NOVEMBER 2013

Wk	M	T	W	T	F	S	S
44					1	2	3
45	4	5	6	7	8	9	10
46	11	12	13	14	15	16	17
47	18	19	20	21	22	23	24
48	25	26	27	28	29	30	

DECEMBER 2013

Wk	M	T	W	T	F	S	S
48	30	31					1
49	2	3	4	5	6	7	8
50	9	10	11	12	13	14	15
51	16	17	18	19	20	21	22
52	23	24	25	26	27	28	29

अहिंसा का शाब्दिक अर्थ है— न मारना, परन्तु गांधीजी के लिए अहिंसा का अर्थ हत्या न करने मात्र से नहीं (अधिक व्यापक है)। अहिंसा मन, वचन और कर्म से किसी को हानि न पहुँचाना है। स्वार्थ, द्वेष अथवा क्रोधवश किसी को कष्ट पहुँचाना, किसी पर अत्याचार करना, किसी का शोषण या अपमान करना हिंसा है। इसके विपरीत स्वार्थ और द्वेष को त्यागकर क्रोध पर विजय प्राप्त करना तथा किसी को किसी भी प्रकार का दुःख या कष्ट न पहुँचाना अहिंसा है।

गांधी जी ने लिखा है कि "वास्तव में इसका (अहिंसा का) अर्थ यह है कि आप किसी की भावना को चोट नहीं पहुँचाएंगे: किसी के प्रति, यहाँ तक कि उसके प्रति भी जो कि अपने को आपका दुश्मन समझता है, किसी प्रकार का कटु या अनुदार (uncharitable) विचार पोषण नहीं करेंगे। जो व्यक्ति इस (अहिंसा के) सिद्धान्त का पालन करता है उसके लिए कोई भी शत्रु नहीं है।" इतना ही नहीं, गांधीजी के अनुसार हमारे शत्रु को किसी दूसरे के द्वारा या ईश्वर के अभिशाप से किसी प्रकार का नुकसान पहुँचे या उसका नाश हो या हमारे रास्ते से वह रोड़ा हट जाए, इस प्रकार की भावना या विचार अपने मन में लाना अहिंसा के आदर्शों से भ्रष्ट हो जाना है। अतः गांधीजी के शब्दों में, अहिंसा का प्रारम्भ और अन्त आत्म-निरीक्षण में होता है— "जिन खोजा तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ।" इसलिए गांधीजी ने लिखा है कि "अहिंसा व्यापक वस्तु है। हम हिंसा की होली के बीच घिरे हुए पामर प्राणी हैं। यह वाक्य गलत नहीं है कि जीव, जीव पर जीता है। मनुष्य एक क्षण के लिए भी बाह्य हिंसा के बिना जी नहीं सकता। खाते-पीते

उठते - बैठते सभी क्रियाओं में इच्छा - अनिच्छा से वह कुछ-न-कुछ हिंसा तो करता ही रहता है। यदि इस हिंसा से छूटने के लिए वह महाप्रयत्न करता है, उसकी भावना में अनुकम्पा होती है वह सूक्ष्म से-सूक्ष्म जन्तु का भी नाश नहीं चाहता और यथाशक्ति उसे बचाने का प्रयत्न करता है, तो वह अहिंसा का पुजारी है। उसके कार्यों में निरन्तर संयम की वृद्धि होगी, उसमें निरंतर करुणा बढ़ती है किन्तु देहधारी बाह्य हिंसा से सर्वथा मुक्त नहीं हो सकता।"

गाँधी जी के अनुसार सामाजिक व व्यक्तिगत जीवन में कुछ ऐसी परिस्थितियाँ या दशाएँ होती हैं जबकि सभी को बाध्य होकर कुछ-न-कुछ हिंसा करनी ही पड़ती है। गाँधीजी के ही शब्दों में "जिस प्रकार अपने रोगी के शरीर पर रोगी की भलाई के लिए चाकू चलाना डाक्टर के लिए हिंसा का कार्य नहीं बल्कि विशुद्धतम (Purest) अहिंसा का पालन है, उसी प्रकार किन्हीं अनिवार्य परिस्थितियों में एक व्यक्ति को इससे भी आगे बढ़ने की ओर पीड़ित (sufferer) के कष्ट-निवारण के हेतु उसे मार डालने तक की आवश्यकता हो सकती है।" इस प्रकार किसी प्राणी को स्वयं उसी के कष्ट-निवारण के लिए मार डालना गाँधीजी के मतानुसार हिंसा है ही नहीं। भयंकर असाध्य रोग से पीड़ित एक प्राणी को हृदय-विदारक कष्ट सहते तिल-तिल करके मरने देने की अपेक्षा मार डालना ही अधिक उचित है। ऐसा करना हिंसा नहीं माना जाएगा। इसके विपरीत यदि कोई व्यक्ति स्वयं हिंसात्मक कार्य न करते हुए भी दूसरों को इस कार्य करने में मदद देता है तो उसकी यह मदद भी हिंसा मानी जाएगी।

गाँधीजी की अहिंसा की धारणा के सम्बन्ध में विवेचना करते हुए श्री सी. एफ. एंड्रूज (C.F-Andrews) ने लिखा है कि अहिंसा केवल नकारात्मक गुण (Negative virtue) ही नहीं है, इसमें सकारात्मक (Positive) रूप में भलाई करना उतना ही आता है जितना कि नकारात्मक रूप में किसी को नुकसान पहुँचाने से इनकार करना। दूसरे शब्दों में, अहिंसा की धारणा के दो स्पष्ट पक्ष (aspects) हैं — नकारात्मक और सकारात्मक। नकारात्मक (Negative) दृष्टिकोण से अहिंसा का अर्थ स्वार्थ, द्वेष या क्रोधवश किसी को भी, चाहे वह शत्रु ही क्यों न हो, कष्ट न पहुँचाना और न मारना है। सकारात्मक (Positive) दृष्टिकोण से अहिंसा का मूल तत्व है सर्वोच्च प्रेम, सर्वोच्च दयालुता और उदारता, सर्वोच्च आत्म-बलिदान, वीरता और सबलता। सबसे प्रेम करो, बुराई को अच्छाई से जीतो, प्राणी मात्र के प्रति दया और उदार भाव का पोषण करो और अत्याचारी के सामने कभी सिर न झुकाओ, ये ही अहिंसा के मूल तत्व हैं। "हम सशक्त हों फिर भी पशु-बल का प्रयोग न करें, दण्ड देने की शक्ति रखते हुए भी क्षमा कर सकें, तभी हम अहिंसा के उपासक समझे जायेंगे। जिसमें दम ही नहीं, जो अशक्त, कायर व भयभीत है, वह किसी को क्या क्षमा करेगा?" यंग इण्डिया (Young India) में गाँधीजी ने लिखा है, "अहिंसा भीरु और कायर लोगों का तरीका नहीं है। यह तो उन वीरों का तरीका है जो कि मृत्यु का सामना करने को तैयार हैं। वह जो हाथ में तलवार लेकर मरता है निःसन्देह वीर है, परन्तु वह जो अपनी छोटी उंगली तक को उठाए बिना तथा बिना डरे मृत्यु का सामना करता है, अधिक वीर है।"

गाँधीजी के मतानुसार, "अहिंसा सामाजिक धर्म है। अहिंसा केवल वैयक्तिक गुण नहीं है। वह एक सामाजिक गुण भी है, अ

अन्य गुणों की तरह इसका भी विकास किया जाना चाहिए। यह तो मानना ही होगा कि समाज के पारस्परिक व्यवहारों का नियमन बहुत हद तक अहिंसा के द्वारा होता है। मैं इतना चाहता हूँ कि इस सिद्धान्त को बड़े पैमाने पर, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पैमाने पर, विस्तार किया जाए।"

युद्ध से पीड़ित, हिंसा में डूबे हुए आधुनिक संसार में अहिंसा की सामाजिक उपयोगिता अत्यधिक है। गाँधीजी का दृढ़ विश्वास था कि एक वास्तविक प्रजातान्त्रिक (democratic) सामाजिक व्यवस्था की स्थापना में अहिंसा प्रथम आवश्यक तत्व है। अहिंसा के बिना इसका अस्तित्व कुछ दिनों के लिए ही हो सकता है। गांधीजी के ही शब्दों में, "सच्चा प्रजातन्त्र या जनता के स्वराज्य की प्राप्ति असत्य तथा हिंसात्मक साधनों द्वारा कभी नहीं हो सकती, क्योंकि इन साधनों के प्रयोग का अर्थ होगा विरोधियों को कुचलना या उनका समूल नाश (extermination) करना। इससे व्यक्तिगत स्वतन्त्रता नहीं रह जाएगी। व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की पूर्ण-प्राप्ति तो केवल एक अमिश्रित (unadulterated) अहिंसा के राज्यों में ही हो सकती है।" इसी लिए गांधी जी के लिए "अहिंसा स्वराज्य से पहले आती है।"

इस प्रकार विश्व-शान्ति, सामाजिक व्यवस्था तथा व्यक्तिगत जीवन-संगठन में अहिंसा का अस्त्र एक महा-शक्ति है। अहिंसात्मक उपायों से समस्त व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक समस्याओं को सुलझाया जा सकता है क्योंकि अहिंसा का साधक कभी हारता नहीं है। अहिंसा में पराजय जैसी कोई भी चीज नहीं है क्योंकि अहिंसा का शस्त्र घृणा नहीं सर्वोच्च प्रेम है; और घृणा सदैव मारती है पर प्रेम कभी मारता नहीं है; जो कुछ प्रेम से प्राप्त होता है वह चिरस्थायी होता है।